



SEE MORE JESUS · WANTTOSEEMORE.COM

बाइबिल् धैर्यविषये किं वदति? — भाग: २ · स्ट्रॉङ्ग-संख्यासहितानि केजेवी-धर्मशास्त्रवचनानि

भाग: २ · मूलभूतबाइबिलसिद्धान्तस्य आधारेण निर्मितः नूतनः अध्ययनः
धीरता — मौलिकं बाइबलीयं सिद्धान्तम्

प्रारम्भिकवचनम्

युष्मद्-श्रद्धायाः परीक्षा धृतिं जनयति, धृतिश्च स्वकीयं पूर्णं कार्यं साधयितुम् अनुमन्तव्या। एतद् अस्माकं पूर्वं स्थापितं मूलम्; अधुना वयं तस्यैव सत्यस्य नवीनैः साक्षिभिः सह अग्रे गच्छामः। यूनानी शब्दः हुपोमेनो (G5281, धृतिः) अस्ति, सहनशीला स्थिरता, दबावे अधः स्थितिः; क्रियापदं हुपोमेनो (G5278, सहनम्) अस्ति, भारस्य अधः स्थातुं न च पलायितुम्। तस्य समीपे मक्रोथुमिया (G3115, दीर्घसहनम्) तिष्ठति, दीर्घक्षमः आत्मा यः कालं प्रतीक्षते। पुरातनः इब्रीयशब्दः कवाह (H6960, प्रतीक्षा) अस्ति, स्ट्रॉङ्गमहोदयस्य मतेन तस्य मूलस्य अर्थः रज्जुवत् बन्धनम् इति — यः प्रतीक्षते सः स्वस्य ईश्वरेण बद्धः भवति। सावधानतया पश्यन्तु, शास्त्रे धृतिः कुत्र तिष्ठति: ईश्वरस्य इच्छायां कृतायां पश्चात्, प्रतिज्ञायाः प्राप्तेः पूर्वं च। सा धावनं धावति। सा आत्मानं अधिकरोति। सा प्रतिज्ञाः अधिकारेण प्राप्नोति। सा कृषीवलः इव स्वकीयस्य बहुमूल्यस्य फलस्य प्रतीक्षां करोति, यावत् प्रभोः आगमनम्। न च त्वं स्वयमेव एकाकी तां प्राप्नोषिः शास्त्राणि तां शिक्षयन्ति, धृत्याः ईश्वरः च तां दत्ते। धन्यः सः जनः यः सहते। तत् अन्वेष्यताम्।

त्रयः प्रश्नाः यान् इदम् अध्ययनम् उत्तरति:

1. वयं धैर्यं किमर्थम् अपेक्षामहे, ये च सहन्ते तेभ्यः किं प्रतिज्ञातम् अस्ति?
2. धैर्यं कुतः आगच्छति — कः तत् ददाति, कुत्र च तत् शिक्ष्यते?
3. धैर्यं कियत्कालं यावत् प्रतीक्षां कर्तव्यम्, तथा प्रतीक्षमाणानां कृते प्रभुः किं फलम् आनयति?

पूर्वं स्थापितो भित्तिः — धैर्यम्

आधारः → तव विश्वासस्य परीक्षा धृतिम् जनयति (याकूबः १:३)।

आधारः → धैर्यं स्वकीयं पूर्णं कर्म करोतु, यथा यूयं सम्पूर्णाः निरपेक्षाः च भवेत, किमपि न्यूनं न स्यात् (याकोबः १:४)।

आधारः → क्लेशः धृतिं जनयति + धृतिः, अनुभवम् + अनुभवः, आशाम् (रोमापत्रम् ५:३-४)।

आधारः → इन्द्रियसंयमे धैर्यं योजयत + धैर्यं ईश्वरभक्तिं (द्वितीयपेतरः १:६)।

आधारः → अत्र पवित्राणां धैर्यं वर्तते: ये ईश्वरस्य आज्ञाः पालयन्ति (प्रकाशितवाक्यम् १४:१२)।

आधारः → धन्यः पुरुषः यः प्रलोभनं सहते: सः जीवनस्य मुकुटं लप्स्यते (याकूबः १:१२)।

अयं द्वितीयो भागः नूतनसाक्षिणां समूहेन तस्याः एव सत्यस्य पुष्टिं करोति।

ग्रीकभाषायाः प्रमुखशब्दाः

“सहिष्णुता” — **G5281 hupomone** — धैर्यपूर्वं सहनम्, अधः धारणम्
युष्मभ्यं धैर्यम् अपेक्षितम्, यथा यूयं प्रतिज्ञां प्राप्नुयात।

“सहते” — **G5278 hupomeno** — अधः स्थातुम्, परीक्षाः सोढुम्, धैर्यं धारयितुम्
वयं तान् धन्यान् मन्यामहे ये सहन्ते।

“दीर्घसहिष्णुता” — **G3115 makrothumia** — दीर्घसहनम्, क्षमाशीलता
सर्वधैर्याय दीर्घसहिष्णुतायै च आनन्देन सह

“धैर्यं धारय” — **G3114 makrothumeo** — चिरं सोढुम्, दीर्घधैर्यं धारयितुम्, धैर्यपूर्वकं सोढुम्
तस्मात्, हे भ्रातरः, प्रभोः आगमनं यावत् धैर्यं धारयत।

(मम व्यक्तिगताः विचाराः — द्वे महाशब्दे लक्ष्यताम्, यतः ते निकटसम्बद्धे सत्यपि न समाने स्तः। hupomone (G5281, धैर्यम्) पीडायाः अधः धारणम् अस्ति — यः भारः वोढव्यः तस्य कृते शब्दः। makrothumia (G3115, दीर्घसहिष्णुता) दीर्घक्रोधरहितस्य आत्मनः शब्दः अस्ति — यः कालः प्रतीक्षणीयः तस्य कृते शब्दः। इय्योबः प्रथमं दर्शयति; कृषकः द्वितीयं दर्शयति। शास्त्रं च प्रत्येकं शब्दं स्वस्मिन् स्थाने स्थापयतिः धावनाय परीक्षायै च hupomone अपेक्षितम्, उत्तराधिकारिणश्च प्रतिज्ञाः makrothumia द्वारा प्राप्नुवन्ति, यतः प्रतिज्ञा विलम्बिता भवति। ईश्वरः प्रत्येकं शब्दं यत्र सः स्थापितवान् तत्कृते एव वयनं कृतवान्, तच्च वयनम् अस्मान् शिक्षयतिः भारः वोढव्यः, कालश्च प्रतीक्षणीयः, उभयमेव कर्तव्यम्।)

हिब्रूभाषायाः मुख्यशब्दाः

“प्रतीक्षस्व” — **H6960 qavah** — संबद्धुम्, अन्वेष्टुम्, प्रत्याशितुम्, प्रतीक्षितुम्
अहं परमेश्वरस्य प्रतीक्षां धैर्यपूर्वकम् अकरवम्।

“धैर्येण प्रतीक्षस्व” — **H2342 chul** — प्रसववेदनां भोक्तुम्, पीडितं भवितुम्, प्रतीक्षां कर्तुम्
परमेश्वरे विश्रामं कुरु, तस्य कृते च धैर्येण प्रतीक्षां कुरु।

“विश्वासः” — **H3176 yachal** — प्रतीक्षितुम्, धैर्यं धारयितुम्, आशां कर्तुम्
यद्यपि सः मां हन्यात्, तथापि तस्मिन् विश्वासं करिष्यामि।

“आशा” — **H3175 yachiy** — प्रतीक्षमाणः, यः आशां कुर्यात्
साधु हि तत् यत् मनुष्यः आशां कुर्यात् शान्त्या च प्रतीक्षां कुर्यात्।

(मम वैयक्तिकाः विचाराः — स्ट्रॉङ्ग इति कथयति यत् qavah (H6960, प्रतीक्षा करणम्) इति पदस्य मूलतः अर्थः भवति संयोजनम्, यथा रज्जुः वलितः भवति; ततश्च, अन्वेषणम्, अपेक्षा च। यः परमेश्वरं प्रति प्रतीक्षां करोति सः प्रतीक्षाकाले तस्मात् न विच्छिन्नः भवति — सः रज्जुनेव तेन सह बद्धः भवति, प्रतीक्षा एव बन्धनं भवति। तथा च chul (H2342, धैर्येण प्रतीक्षा करणम्) इत्यस्य अर्थः भवति पीडायुक्तं श्रमं कर्तुम्, यथा प्रसववेदनां सहमाना स्त्रीः काचित् प्रतीक्षा वेदनास्वरूपा भवति, तथापि ईश्वरः तां धैर्यम् इति वदति। तथैव yachal (H3176, प्रतीक्षा करणम्, आशा करणम्) इति अय्यूबस्य शब्दः, तथा तस्मात् उत्पन्नं yachiy (H3175, आशान्वितः) इति च लक्ष्यताम्: धैर्यवान् जनः आशान्वितः जनः भवति। सः निरर्थकं न प्रतीक्षते; सः तम् एव प्रतीक्षते।)

उद्घाटन-आधारः

Hebrews 10:36 यातो यूयं येनेश्वरस्येच्छां पालयित्वा प्रतिज्ञायाः फलं लब्धुम् तदर्थं यूयमभि धैर्यात्सहनं कर्तव्यं

[**G5281 hupomone** ■]

युष्माकं धैर्यस्य आवश्यकता वर्तते + यदा यूयम् ईश्वरस्य इच्छां साधितवन्तः भविष्यथ → तदा यूयं प्रतिज्ञां प्राप्तुं शक्यथ।

(मम व्यक्तिगतविचाराः — शास्त्रं कथयति यत् भवद्भ्यः धैर्यम् आवश्यकम् अस्ति। तत् केषाञ्चित् कृते अलङ्कारमात्रं न भवति; तत् सर्वेषां कृते आवश्यकता अस्ति। hupomone (G5281, धैर्यम्) इति धैर्यपूर्वकं सहनम्, दबावस्य अधः स्थिरतया धारणम् अस्ति। तथा पश्यत तस्य स्थानं कुत्र वर्तते — ईश्वरस्य इच्छायाः करणस्य अनन्तरं, प्रतिज्ञायाः प्राप्तेः पूर्वं च। बहवः जनाः ईश्वरस्य इच्छां कृत्वा प्रतीक्षायां निराशाः जाताः — प्रतिज्ञा न नष्टा, केवलं विलम्बिता अस्ति। धैर्यं जनं करणात् प्राप्तिं यावत् वहति।)

धैर्येण धावत — यूयं स्वात्मानं अधिकुरुत

A. Hebrews 12:1 अतो हेतोरेतारं साक्षिमेघै रैष्ठिताः सन्तो रयमपि सर्ववर्षाभम् आशुबाधकं पापं निष्क्रियत्वाकं गमनाय निरूपिते मार्गे धैर्येण धावाम [G5281 hupomone ■]

सर्वं भारं त्यजाम + अस्मत्समक्षं स्थापितां धावनस्पर्धां धैर्येण धावाम।

(মম স্বকীয়া: বিচারা: — ক্ষমা স্থিরতয়া স্থিতি: ন ভবতি; সা তু ধাবনম্ এব ভবতি। ধাবনপথ: অস্মত্সমক্ষে বিরচিত: আস্তি: বয়ং মাগং ন বৃণীমঃ, পরন্তু তং ধাবিতুম্ এব বৃণীমঃ। কশ্চন চ ভাৰেণ আক্রান্ত: সন্ ন ধাবতি — সৰ্ব্ভাৰং পাপং চ ত্যক্ত্বা পশ্চাত্ ধাবতু। hupomone (G5281, ক্ষমা) সম্পূৰ্ণস্য ধাবনপথস্য দীৰ্ঘত্বপৰ্য্যন্তং স্থিৰতাং ধায়তি।)

B. Luke 21:19 তস্মাদেৱ ধৈৰ্য্যমবলম্ব্য স্বশ্রদ্ধাশ্রদ্ধাং বক্ষত **[G5281 hupomone ■]**

তস্মাদেৱ ধৈৰ্য্যমবলম্ব্য স্বশ্রদ্ধাশ্রদ্ধাং বক্ষত।

(মম ব্যক্তিগতবিচারা: — লঘু: শ্লোক:, কিন্তু গম্ভীৰ:। যুষ্মাকং ধৈৰ্য — তস্য সমীপে ন, অপিতু তস্য অন্ত: — মনুষ্য: স্বকীয়ম্ আত্মানং প্রাপ্নোতি। ধৈৰ্য ত্যজ, তৰ্হি আত্মা অপহিয়তে; তত্ রক্ষ, তৰ্হি ত্বং স্বকীয়ম্ আত্মানং ধায়সি এব।)

II. বিশ্বাসেন ধৈৰ্যেণ চ প্রতিজ্ঞা: অধিকুৰ্বন্তি

A. Hebrews 6:12 অতঃ শিথিলা ন ভৱত কিন্তু যে বিশ্বাসেন সহিষ্ণুতয়া চ প্রতিজ্ঞানাং ফলাধিকাৰিণো জাতান্তেষাম্ অনুগামিনো ভৱত

[G3115 makrothumia ■]

অলসা: ন ভৱত → যেষাং শ্রদ্ধাধৈৰ্য্যভ্যাং প্রতিজ্ঞানাম্ অধিকাৰ: ভৱতি তেষাম্ অনুযায়িন: ভৱত।

(মম স্বকীয়া: বিচারা: — ইহ ধ্যান্তি: মক্ৰোথুমিয়া (G3115, দীৰ্ঘসহিষ্ণুতা) অস্তি, দীৰ্ঘচিত্তস্য আত্মা। তথা যুগ্মম্ অবলোকয়ত- শ্রদ্ধা চ ধ্যান্তি: চ। শ্রদ্ধা প্রতিজ্ঞাং গৃহ্ণতি; ধ্যান্তি: তাং দৃঢ়তয়া ধায়তি যাবত্ সা আগচ্ছতি। আলস্যশীলস্য উভয়মপি নাস্তি; উত্তরাধিকাৰিণাং তু উভে অপি স্ত:।)

B. Hebrews 6:15 অনেন প্রকাৰেণ স সহিষ্ণুতাং বিধায় তস্যাঃ প্রত্যাশায়াঃ ফলং লব্ধৱান্ **[G3114 makrothumeo ■]**

স: ধৈৰ্যেণ সহনং কৃৎৱা → প্রতিজ্ঞাং প্রাপ্তৱান্।

(মম ব্যক্তিগতবিচারা: — অয়ম্ অব্রাহম:। প্রতিজ্ঞা যস্মিন্ দিবসে উক্তা আসীত্ তস্মিন্ৰেৱ দিবসে ন আগতা; বচনস্য প্রাপ্তেশ্চ মध्ये এক: "পশ্চাত্কাল:" আসীত্, সা চ ৰিক্ততা ধৈৰ্য্যযুক্তসহিষ্ণুতয়া পূৰিতা আসীত্। মক্ৰোথুমেও (G3114, ধৈৰ্যৱান্ ভৱিতুম্) — স: চিরকালং প্রতীক্ষিতৱান্, তত্ চ প্রাপ্তৱান্। তথৈৱ প্রত্যেক: উত্তরাধিকাৰী য: ন ত্যজতি, প্রাপ্ণ্যতি।)

C. Romans 8:25 যদ্ অপ্রত্যাশং তস্য প্রত্যাশাং যদি ৰয়ং কুৰ্বীমহি তৰ্হি ধৈৰ্য্যম্ অবলম্ব্য প্রতিক্ষামহে **[G5281 hupomone ■]**

যদ্ বয়ং ন পশ্যাম: তস্য আশাং কুৰ্ম: → ধৈৰ্যেণ তত্ প্রতীক্ষামহে।

III. প্রভো: আগমনং যাবত্ ধৈৰ্য্য ধায়ত

A. James 5:7 হে ভ্ৰাতৰঃ, যুয়ং প্রভোৰাগমনং যাবদ্ ধৈৰ্য্যমালম্বস্বৱং পশ্যত কৃষিৱলো ভূমে বহুমূল্যং ফলং প্রতিক্ষমাণো যাবৎ প্রথমম্ অস্তিমঞ্চ ৰুষ্টিজলং ন প্রাপ্নোতি তাবদ্ ধৈৰ্য্যম্ আলম্বতে **[G3114 makrothumeo ■]**

প্রভো: আগমনপৰ্য্যন্তং ধৈৰ্য্য ধায়ত + কৃষক: পৃথিৱ্যা: বহুমূল্যং ফলং প্রতীক্ষতে।

(মম ব্যক্তিগতবিচারা: — ধৈৰ্যেণ কিয়ত্কালাং প্রতীক্ষা করণীয়া? যাবত্ প্রভো: আগমনং ভৱতি — এষ: এৱ চিহ্ন:। দৃশ্যং চ পশ্যত: কৃষক: বৃষ্টিং ত্বৰিতুং ন শক্নোতি, স: তস্যা: প্রতীক্ষাং কৰোতি, যত: ফলং বহুমূল্যম্ অস্তি। তৱ ফলম্ অপি তথৈৱ।)

B. James 5:8 যুয়মপি ধৈৰ্য্যমালম্ব্য স্বান্তঃকৰণানি স্থিৰীকুৰত, যতঃ প্রভোৰুপস্থিতিঃ সমীপৱৰ্ত্তিন্যভৱৎ **[G3114 makrothumeo ■]**

প্রভো: আগমনম্ নিকটম্ অস্তি → যুয়ম্ অপি ধৈৰ্যবন্ত: ভৱত + স্বহৃদয়ানি স্থিৰীকুৰত।

C. James 5:11 পশ্যত ধৈৰ্য্যশীলা অস্মাভি ধন্যা উচ্যন্তে আযুবো ধৈৰ্য্যং যুস্মাভিৰশ্রীৰি প্রভোঃ পৰিণামশ্চাদৰ্শি যতঃ প্রভু বহুকৃপঃ সৰুৰুণশ্চান্তি **[G5281 hupomone ■]**

বয়ং ধৈৰ্য্য সহমানান্ ধন্যান্ মন্যামহে + যুয়ম্ আয়োবস্য ধৈৰ্য্য শ্রুতৱন্ত: → প্রভু: অতীৱ দয়ালু: কোমলকৃপায়ুক্তশ্চ অস্তি

(মম ব্যক্তিগতবিচারা: — অত্র দ্বে পদে সংগচ্ছতে: 'সহনম্' ইতি হুপোমেণো (G5278, সৌদৃশ্য), তথা 'ইয়োবস্য ধৈৰ্যম্' ইতি হুপোমোনে (G5281, ধৈৰ্যম্) — ধারণাবাক্যং পদম্ এতত্, ন তু প্রতীক্ষাবাক্যম্। ইয়োব: কেৱলং প্রতীক্ষাং নাকৰোত্, অপি তু ভাৰং ধৃতৱান্। তথা অস্য অন্তং লক্ষ্যতাম্: যে ইয়োবস্য ধৈৰ্যস্য ৱাৰ্তা শ্রুতৱন্ত:, তে প্রভুণা আনীতং পৰিণামং দৃষ্টৱন্ত:, স চ পৰিণাম: দয়া কোমলকৃপা চ অস্তি। পৰীক্ষায়া: অন্ত: বিদ্যতে, অন্তশ্চ তস্য হৃদয়ং প্রকটয়তি।)

IV. সহিষ্ণুতা কুত: আগচ্ছতি — শাস্ত্রাণি, সহিষ্ণুতায়া: চ ইশ্বৰ:

A. Romans 15:4 অপৰঞ্চ ৰয়ং যৎ সহিষ্ণুতাসান্ত্বনযো ৰ্জনকেন শাস্ত্ৰেণ প্রত্যাশাং লভেমহি তন্নিমিত্তং পূৰ্ব্বকালে লিখিতানি সৰ্ব্বৱচনান্যস্মাকম্ উপদেশার্থমেৱ লিখিতৈৰে **[G5281 hupomone ■]**

পূৰ্ব লিখিতম্ = অস্মাকং শিক্ষার্থ লিখিতম্ → ধৈৰ্যেণ শাস্ত্রাণাং সান্ত্বনয়া চ আশাং প্রাপ্তৱাম।

B. Romans 15:5 সহিষ্ণুতাসান্ত্বনযোৰাকৰো য ঈশ্বৰঃ স এৱং কৰোতু যৎ প্রভু যীশুখ্ৰীষ্টে ইৱ যুস্মাকম্ একজনোহন্যজনেন সান্নিধ্যং মনস ঐক্যম্ আচৰেৎ; **[G5281 hupomone ■]**

ধৈৰ্যস্য সান্ত্বনস্য চ ইশ্বৰ: → যুষ্মান্ পরস্পরং সমানচিত্তান্ ভৱিতুং অনুগৃহ্ণাতু।

(মম স্বকীয়া: বিচারা: — কুত: মনুষ্য: ধৈৰ্য্য প্রাপ্নোতি? দ্বে উত্তরে সহ তিষ্ঠত: — ধৰ্মশাস্ত্রাণি, তথা ধৈৰ্যস্য ইশ্বৰ: স্বয়ম্। পুৰা লিখিতানি ৱচনানি — ইয়োব্, অৱ্ৰাহাম্, দাৱুদ্ — অস্মান্ শিক্ষয়িতুং লিখিতানি, যথা বয়ং আশাং লভেমহি। যচ্চ ধৰ্মশাস্ত্রাণি শিক্ষয়ন্তি, তত্ ইশ্বৰ: প্রয়চ্ছতি — স: ধৈৰ্যস্য ইশ্বৰ: ইতি উচ্যতে, যত্ স: অস্তি তত্ স: দত্তে। তং প্রার্থয়ত, গ্রন্থং চ অন্বেষণয়ত।)

C. Colossians 1:11 যথা চেশ্বৰস্য মহিমযুক্তয়া শাক্ত্য সানন্দেন পূৰ্ণাং সহিষ্ণুতাং তিতিক্ষাঞ্চাচৰিতুং শক্ষ্যত তাদৃশেন পূৰ্ণবলেন যদ্ বলবন্তো ভৱেত **[G5281 hupomone ■]**

সৰ্বসামৰ্থ্যেন সশক্তিৰূপাঃ → আনন্দেন সহ সৰ্বধৈৰ্য্য চিৰসহনায় চ।

(মম ব্যক্তিগতবিচাৰাঃ — তৎ সৰ্ব সামৰ্থ্য কস্য নিমিত্তম্ অস্তি ইতি নিৰীক্ষণীয়ম্। সৰ্বেন বলেন বলবান্ কৃতঃ, তস্য তেজস্বিসামৰ্থ্যানুসাৰেণ — তস্য চ লক্ষ্যং চিহ্নানি আশ্চৰ্য্যকৰ্মাণি চ ন ভৱতি, অপি তু সৰ্ব ধৈৰ্য্যম্। তস্য সমীপে স্থিতং দীৰ্ঘসহনং মক্ৰোথুমিয়া (G3115, দীৰ্ঘসহনম্) অস্তি, হুপোমোনে (G5281, ধৈৰ্য্যম্) ইত্যনেন সহ একত্ৰ স্থাপিতম্ — বহনং প্ৰতীক্ষা চ যুগপৎ — উভয়ং চ আনন্দেন সহিতম্। আনন্দহীনং ধৈৰ্য্যং ভাৰভূতং বস্তু ভৱতি; তস্য সামৰ্থ্যং তৎ আনন্দিতং কৰোতি।)

V. প্ৰভুং প্ৰতি প্ৰতীক্ষস্ব — প্ৰাচীনঃ সাক্ষী

A. Psalm 37:7 ↗ *read this in your Bible*

পৰমেশ্বৰে বিশ্ৰাম্য + তস্য ধৈৰ্য্যেন প্ৰতীক্ষস্ব + স্বয়ং মা ব্যথস্ব।

(মম ব্যক্তিগতঃ বিচাৰাঃ — একস্মিন্ শ্বাসে ত্ৰীণি পদানি: বিশ্ৰামঃ, প্ৰতীক্ষা, অনুতাপং মা কুরু। বিশ্ৰামাৰ্থকং পদং দমম্ (H1826, মৌনং ভবিতুম্, স্থিৰং ভবিতুম্) অস্তি — তস্য সম্মুখে স্থিৰো ভৱ। তথা ধৈৰ্য্যেন প্ৰতীক্ষস্ব ইতি চুল্ (H2342, প্ৰসববেদনাং সোদুৰ্গম, প্ৰতীক্ষিতুম্) অস্তি — ইয়ং প্ৰতীক্ষা প্ৰসববেদনাবৎ অনুভূয়তে, তথাপি সা ধৈৰ্য্যমেব অস্তি। অনুতাপঃ তং জনং পশ্যতি যঃ সমৃদ্ধিঃ প্ৰাপ্নোতি; বিশ্ৰামস্তু যহোবাং পশ্যতি।)

B. Psalm 40:1 ↗ *read this in your Bible*

অহং ধৈৰ্য্যেন প্ৰভুম্ অপ্ৰতীক্ষে → সঃ মাং প্ৰতি নিৰনম্যত + মম আৰ্ত্তৰং অশ্ৰুণোত্।

(মম স্বকীয়াঃ বিচাৰাঃ — অত্ৰ প্ৰাচীনঃ শব্দঃ qavah (H6960, প্ৰতীক্ষা কৰণম্) ইতি ৱৰ্তে — ইব্ৰীভাষায়াং দায়ুদ দ্বিঃ ৱদতি — প্ৰতীক্ষায়াং প্ৰতীক্ষিতবান্ ইতি — সা প্ৰতীক্ষা স্বস্য পূৰ্ণাং মাত্ৰাং যাবৎ বিস্তাৰিতা। স্ট্ৰেঞ্জ্ ইতি গ্ৰন্থঃ কথয়তি যৎ মূলধাতোঃ অৰ্থঃ ভৱতি সংযোজনম্, ৱজ্জুঃ ইব — প্ৰতীক্ষমাণা আত্মা স্বস্য ঈশ্বৰেণ সহ বদ্ধা ভৱতি। তথা উত্তৰং পশ্যত — সঃ নম্ৰীভূতঃ — মহান্ ঈশ্বৰঃ স্বকৰ্ণে প্ৰতীক্ষমাণস্য জনস্য কৃতে নম্ৰীকৃতবান্।)

C. Lamentations 3:26 ↗ *read this in your Bible*

সাধু তৎ যৎ মনুষ্যঃ যহোবায়াঃ পৰিত্ৰাণায় আশাং কুৰ্য্যত্ মৌনেন চ প্ৰতীক্ষেত।

(মম স্বকীয়াঃ বিচাৰাঃ — অত্ৰ আশা যচীল্ (H3175, প্ৰতীক্ষমাণঃ) ইতি অস্তি, যা যচল্ (H3176, প্ৰতীক্ষাং কৰ্তুম্, আশাং কৰ্তুম্) ইত্যস্মাত্ আগচ্ছতি — অয্যোবস্য স্বকীয়াঃ শব্দঃ, যথা চায়া দৰ্শয়িষ্যতি। আশা চ শান্তা প্ৰতীক্ষা চ সহ তিষ্ঠতঃ, শাস্ত্বং চ তৎ উত্তমম্ ইতি ৱদতি। পৰমেশ্বৰস্য ত্ৰাণং তস্মৈ জনায় আগচ্ছতি যঃ শান্তেন প্ৰতীক্ষেত।)

দ্বয়োঃ মুখম্

Hebrews 10:36 যতো যুযং যেনেশ্বৰসেচ্ছাং পালয়িত্বা প্ৰতিজ্ঞায়াঃ ফলং লভস্বং তদৰ্থং যুয্মাভি ধৈৰ্য্যায়লক্ষনং কৰ্তব্যং

[G5281 hupomone ■]

যুয্মাকং ধৈৰ্য্যস্য আবশ্যকতা ৱৰ্তে → যুয়ং প্ৰতিজ্ঞাং প্ৰাপুযাত।

Hebrews 6:12 অতঃ শিখিলা ন ভৱত কিন্তু যে বিশ্বাসেন সহিষ্ণুতয়া চ প্ৰতিজ্ঞানাং ফলাধিকাৰিণো জাতান্তেষাম্ অনুগামিনো ভৱত

[G3115 makrothumia ■]

বিশ্বাসেন ধৈৰ্য্যেন চ প্ৰতিজ্ঞাঃ অধিকুৰ্বন্তি।

Hebrews 6:15 অনেন প্ৰকাৰেণ স সহিষ্ণুতাং ৱিধায় তস্যাঃ প্ৰত্যাশায়াঃ ফলং লব্ধৱান্ **[G3114 makrothumeo ■]**

সঃ ধৈৰ্য্যেন সহনং কৃৎৱা → প্ৰতিজ্ঞাং প্ৰাপ্তৱান্।

Luke 21:19 তস্মাদেৱ ধৈৰ্য্যমৱলম্ব্য স্বস্বপ্ৰাণান্ ৰক্ষত **[G5281 hupomone ■]**

তস্মাদেৱ ধৈৰ্য্যমৱলম্ব্য স্বস্বপ্ৰাণান্ ৰক্ষত।

(মম স্বকীয়াঃ বিচাৰাঃ — সাধুগণঃ সমীপে স্থাপয়তু। একঃ ৱদতি, যুয্মাৰ্থং ক্ষমা আবশ্যকী, যতঃ প্ৰতিজ্ঞাং প্ৰাপুযাত। অন্যঃ ৱদতি, শ্ৰদ্ধয়া ক্ষময়া চ তে প্ৰতিজ্ঞাঃ অধিকুৰ্বন্তি; অব্ৰাহমঃ চ, যদা ক্ষমাপূৰ্বকং সহিতবান্, তদা প্ৰতিজ্ঞাং লব্ধৱান্। প্ৰাপুযাত, অধিকুৰ্য্যত্, লব্ধৱান্ — ত্ৰয়ঃ শব্দাঃ, একং সত্যম্: ক্ষমা প্ৰতিজ্ঞা চ পৰস্পৰং বদ্ধৌ স্তঃ, ন চ কশ্চিত্ একং বিনা অন্যং গৃহ্ণাতি। প্ৰভুঃ চ স্বকীয়াং সাধুয়ং যোজয়তি: যুয্মদীয়ায়া ক্ষময়া স্বাত্মানঃ ধাৰয়ত। ক্ষমা সা হস্তঃ যঃ তৎ দৃঢ়ং ধাৰয়তি যৎ ঈশ্বৰেণ প্ৰতিজ্ঞাতম্।)

চায়া চ পূৰ্তিশ্চ

Shadow Job 13:15 ↗ *read this in your Bible*

যদ্যপি সঃ মাং হন্যাৎ, তথাপি অহং তস্মিন্ বিশ্বসিষ্যামি।

Fulfillment James 5:11 পশ্যত ধৈৰ্য্যশীলা অস্মাভি ধন্য উচ্যন্তে আযুবো ধৈৰ্য্যং যুয্মাভিৰশ্ৰাৱি প্ৰভোঃ পৰিণামশ্চাদৰ্শি যতঃ প্ৰভু বৰ্ছকৃপঃ

সকৰুণশ্চান্তি **[G5281 hupomone ■]**

যুযম্ অয্যোবস্য ধৈৰ্য্য শ্ৰুতৱন্তঃ, প্ৰভোঃ পৰিণামং চ দৃষ্টৱন্তঃ → প্ৰভুঃ অতীব কৃপালুঃ কোমলকৰুণশ্চ অস্তি।

(मम स्वकीयाः विचाराः — इय्योबस्य ओष्ठयोः विश्वासस्य शब्दः यहल् (H3176, प्रतीक्षा करणम्, आशां करणम्) इति अस्ति: यादे सः मां हानेभ्यां तथापि, अहं तस्य प्रतीक्षां करिष्यामि एव, अहं तस्मिन् आशां करिष्यामि एव। एतद् एव अन्धकारतमे काले धैर्यम् अस्ति। दुःखे स्थितः इय्योबः छाया अस्ति; याकोबः फलं दर्शयति: ये इय्योबस्य धैर्यस्य वार्तां श्रुतवन्तः, ते प्रभुणा आनीतं फलं दृष्टवन्तः, तत् च फलं करुणया मृदुकृपया च पूर्णम् अस्ति। परीक्षायाः अन्तः विद्यते, अन्ते च प्रभुः तिष्ठति, तस्य हृदयं च सहनशीलानां प्रति मृदु अस्ति।)

समापनम्

2 Thessalonians 3:5 ऐश्वर्यस्य प्रेम्नि श्रीष्टस्य सहिष्णुतायाश्च प्रभुः स्वयं युष्माकम् अन्तःकर्षणानि विनयतु [G5281 hupomone ■]

प्रभुः युष्माकं हृदयानि निर्दिशतु → ईश्वरस्य प्रेम्नि + ख्रीष्टस्य धैर्यपूर्वकप्रतीक्षायाम्।

James 1:12 यो जनः परीक्षां सहते स एव धन्यः, यतः परीक्षितेन प्रीत्य स प्रभुना स्वप्रेमकाबिडः प्रतिष्ठितः जीवन्मुकुटं लभ्यते [G5278 hupomene ■]

धन्यः स पुरुषः यः परीक्षां सहते → स जीवनमुकुटं प्राप्स्यति।

(मम स्वकीयाः विचाराः — अत्र सर्वस्य विषयस्य उपसंहारः वर्तते। धैर्यं आवश्यकं वर्तते, प्रतिज्ञा च तस्मिन् एव अवलम्बते: तत् धावनं समापयति, तत् आत्मानम् अधिकरोति, तत् प्रतिज्ञाः अधिकारेण प्राप्नोति, तत् च प्रभोः आगमनं यावत् प्रतीक्षते। तत् शास्त्रेषु शिक्षते, धैर्यस्य ईश्वरेण च दीयते; तत् परमेश्वरे विश्रामं लभते, श्रुतं च भवति। मूलाधारः अकथयत् यत् युष्माकं विश्वासस्य परीक्षा धैर्यं जनयति; एते नवीनाः साक्षिणः तदेव कथयन्ति, तस्य च परिणामं दर्शयन्ति — न हानौ, अपि तु मुकुटे। प्रभुः स्वयं युष्माकं हृदयं तस्मिन् धैर्यपूर्णप्रतीक्षायां निर्दिशतु: कृषकस्य वृष्टिः आगच्छति, प्रभोः आगमनं समीपे वर्तते, परीक्षितः सन् च जीवनस्य मुकुटं प्राप्स्यति।)

अभ्यासप्रश्नावली

१. इब्रिणः १०:३६ — यतो युष्माकं धैर्यस्य आवश्यकता वर्तते, यतः ईश्वरस्य इच्छां साधयित्वा यूयं:

- तस्य विश्रामं प्रविशेत्
- प्रतिज्ञां प्राप्नुम्
- पृथिवीम् अधिकुर्यात्

२. लूकः २१:१९ — युष्माकं धैर्ये अधिकुरुत स्वकीयान्:

- आत्मानः
- हृदयानि
- मनांसि

३. इब्रिणः ६:१२ — यूयं यत् आलस्ययुक्ताः न भवेत, अपि तु ये श्रद्धया धैर्येण च...तेषाम् अनुयायिनः भवेत:

- शुभं साक्ष्यं प्राप्तवन्तः
- दमितानि राज्यानि
- प्रतिज्ञाः अधिगच्छेत्

४. याकोबः ५:७ — पश्य, कृषकः पृथिव्याः बहुमूल्यं फलं प्रतीक्षते, तस्य कृते च दीर्घं क्षमां धारयति, यावत् सः तत् प्राप्नोति:

- पूर्ववर्षा तथा उत्तरवर्षा
- परिमितरूपेण पूर्ववृष्टिम्
- पृथिव्याः शस्यम्

५. रोमिणः १५:४ — यानि किञ्चन पूर्वं लिखितानि, तानि अस्माकं उपदेशार्थं लिखितानि, यथा वयं धैर्येण शास्त्राणां सान्त्वनया च प्राप्नुयामः:

- शान्तिः
- श्रद्धा
- आशा

६. याकूबः ५:११ — यूयम् अय्योबस्य धैर्यं श्रुतवन्तः, प्रभोः परिणामं च दृष्टवन्तः; यतः प्रभुः अस्ति:

- कृपालुः, करुणापूर्णश्च
- अतीव कृपालुः, कोमलहृदयश्च
- क्रोधे मन्दः, महाकृपायुक्तश्च

७. कलस्सिनः १:११ — सर्वसामर्थ्येन सशक्तीकृताः, तस्य तेजस्विशक्त्यनुसारेण, सर्वधैर्याय चिरसहिष्णुतायै च सह:

- कृतज्ञता
- विनयः

c) आनन्दः

उत्तरकुञ्जिका: 1-b, 2-a, 3-c, 4-a, 5-c, 6-b, 7-c

एतत् अध्ययनं कथं शाखते

पुरातनं प्रतिज्ञानं नवीनेन कथं मिलति — ये परमेश्वरं प्रति प्रतीक्षन्ते ते स्वबलं नवीकरिष्यन्ति; ते धाविष्यन्ति, न च श्रमिष्यन्ति (यशायाह ४०:३१) — तत्र प्रतीक्षा कवाह (H6960, प्रतीक्षा) इति, दावीदस्य स्वकीयं पदम् — नवीनं तु वदति, वयम् अस्मदग्रे स्थापितं धावनमार्गं धृतिपूर्वकं धावाम (इब्री १२:१) — ये प्रतीक्षन्ते ते धावन्तो भवन्ति, स्वकीयाध्ययनार्थं सज्जाः।

शब्दानां माहात्म्यं कथम् अस्ति: इब्रिणः 10:36 पत्रस्य धैर्यं हुपोमोने (G5281, धैर्यपूर्वकं सहनम्) अस्ति, इब्रिणः 6:12 पत्रस्य च धैर्यं मक्रोथुमिया (G3115, दीर्घसहनशीलता) अस्ति — एकः भारं सोढुं तिष्ठति, अपरः दीर्घकालं प्रतीक्ष्य अन्तं गच्छति — कः शब्दः कुत्र स्थितः इति चिह्नितं कुरु, तस्य च कारणं विचारय।

स कथं ख्रीष्टे गुप्तः अस्ति: योहानः युष्माकं भ्राता आसीत्, क्लेशे च राज्ये च यीशुख्रीष्टस्य धैर्यं च सहभागी (प्रकाशितवाक्यम् १:९), प्रभुश्च वदति, यतः त्वं मम धैर्यस्य वचनं रक्षितवान्, अहमपि त्वां परीक्षाकालात् रक्षिष्यामि (प्रकाशितवाक्यम् ३:१०) — धैर्यं तस्य प्रथमं भवति, ततः अस्माकम्।

तत् हृदये कथं योजनीयम्: सहिष्णुता २ पत्रुसः १:५-७ इत्यस्य निःश्रेणिकायां तिष्ठति — आत्मसंयमे सहिष्णुतां योजयत, सहिष्णुतायां च ईश्वरभक्तिं योजयत — तस्याः निःश्रेणिकायाः प्रत्येकं सोपानम् एतस्मिन्नेव अवलम्बते।

एतत् अनन्तत्वं कथं प्राप्नोति: यदि वयं क्लिश्यामहे तर्हि तेन सह राज्यमपि करिष्यामः (द्वितीयतीमथियः २:१२) — तत्र क्लेशः हुपोमेनो (G5278, सहनम्) इति भवति — तथा धन्यः सः नरः यः परीक्षां सहते: यतः परीक्षितः सन् सः जीवनस्य मुकुटं प्राप्स्यति (याकूबः १:१२)।

SOURCES & CREDITS

Scripture: Sanskrit New Testament in Assamese Script (CC BY-SA 4.0) — a redistributable edition, looked up exactly and never machine-translated.

Alternate chapter/verse numbering reconciled with STEP Bible TVTMS (CC BY 4.0).

Strong's numbering & original-language data: OpenScriptures Hebrew Bible (CC BY 4.0); STEP Bible.org — TAHOT/TAGNT/TBESH/TBESG (CC BY 4.0);

Robinson-Pierpont Byzantine Majority Text (Public Domain); Strong's dictionary, 1890 (Public Domain).

Typography: Google Noto fonts (SIL Open Font License 1.1).

© SEE MORE JESUS · wanttoseemore.com — shared under Creative Commons Attribution 4.0 (CC BY 4.0).